अंर्तराष्ट्रीय नृत्य दिवस, 29 अप्रैल 2024 के मौके पर खास पेशकश

पाँवों की थिरकन से ख़ुद की तक़दीर लिखने वाली कथक नृत्याँगना उर्वी आहूजा सिंधी–समाज की पहली मिसाल और मशाल बनीं

(सुरेंद्र वर्मा, दिव्या चतुर्वेदी)

गुज़िश्ता वक्त में घूंघरूओं की छनक और तबले की थाप से गुंजायमान और नज़ाकत से लबरेज शहर लखनउ की पैदाईशी का ही कमाल है कि अपने पांवों के थिरकनों से खुद की तकदीर लिखने वाली उर्वी आहूजा को स्थानीय सिंधी समाज की पहली कथक नृत्यांगना होने का खिताब लेने का श्रेय हासिल तो है ही अलबत्ता अपनी लाजवाब कथक नृत्य कला के साथ साथ अपनी मम्मा के पोशाक के कारोबार में भी हाथ बंटाती है और खुद के फायनेंस सपोर्ट के लिए अलग अलग रंगों के ज्वेल्स स्टोन से कलात्मक मिसमकरम गूंथने कर विक्रय का व्यवसाय भी संचालित करती हैं। मौसिकी के शौक पर आमने सामने गौर किये जाने पर बांसुरी, मुरली, जलतरंग धुन निकालने वाली मेटलिक ड्रम, राजस्थानी लोक संगीत में उंगलियों के बीच में फंसाकर बजाने वाले खड़खड़िया, कौड़ियों से बनी घुघंरूओं के अलावा कितने ना कितने बजाने सजाने के कलेक्शन की धनी उर्वी अपने मॉ–पिता श्रीमति रेखा–मनोज आहूजा की इकलौती संतान है। जाहिरा तौर पर उर्वी नाम के अलग अलग मायनों में से एक मायने उर्वरक भी है, लिहाजा यथा नाम तथा गुण को चरितार्थ करने वाली उर्वी फिलहाल उम्र के 28वें माले पर मकामरत है। इस उंचाई तक पहुंचने के पहले इन्होने अपनी स्कूलिंग की पढ़ाई बिलासपुर के अलग अलग स्कूलों और देहरादून के बिव्हरेली हिल्स स्कूल की टॉपर होकर कंपलिट करीं और दस के बाद खैरागढ़ संगीत विश्वविद्यालय, छत्तीसगढ़ से कथक डॉस में बी.ए. (ऑनर्स) और एम. ए. की तालीम ली है। इस महिने की आखिरी में मसूरी के एक गर्ल्स इंटरनेशनल स्कूल में बतौर कथक डॉस टीचर की पोस्ट पर ज्वाईनिंग करने की उतावली उर्वी अपने मॉ–पिता को छोड़ कर जाने की सोच से भी उदास भी है और असमंजस में भी है। बहरहाल पिता की हिदायतों और खुशियों को तव्वजो देने के खातिर उर्वी बिदाई के गम से उबरने की कोशिश भी कर रही है। पहाड़ो की मनपसंद नगरी मसूरी में जॉब पाने की कामयाबी की छुपी खुशी से लबालब होकर उर्वी अपनी प्रिय सहेलियों दीक्षा, प्रीति, मयूरी को बतौर दावत की ट्रीट देने में भी खुद को मशगूल बनाए हुए हैं। उहापोह मनःस्थिति और उसकी तमाम व्यस्तता के बीच फुरसत निकाल कर आखिरकार उर्वी बातचीत करने में रजामंद हुई। मुलाकात की औपचारिकाताओं के बाद अब तक बीते जीवन के बारे में उर्वी बताती हैं कि दो अक्षरों के अपने नाम उर्वी के मतलब से अंजान थी। मैं अपने बचपने के दौर से काफी वक्त तक पिताजी से बेहद खफा रहकर लड़ती झगड़ती थीं कि आपने मेरा ये क्या नाम रख दिया है जिसे स्पष्टतः उच्चारण क्या सहजता से स्पेल भी नहीं किया जा सकता? क्लास और एक्जाम में आखिर में पुकारा–बिठाया जाता है। नाम बदलने की जिद में आखिर पिता ने मेरे नाम का मतलब समझाये कि उर्वी एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ ज्ञान की नदी है, पृथ्वी है। यह भारतीय मूल का एक स्त्री नाम है, और यह अक्सर लड़कियों को दिया जाता है जिन्हें बुद्धिमान, रचनात्मक और दयालु माना जाता है। उर्वी नाम के कई सकारात्मक अर्थ और संबंध हैं यह ज्ञान बुद्धि और सीखने का विचार सुझाता है इसका तात्पर्य जिज्ञासा की भावना और ज्ञान की प्यास से भी है। तभी तो पूरी बातचीत, उसकी बॉडी लंग्वेज, गुजरी दास्तांन को देख सुनकर ही लगा कि वृषभ राशि वाली यह उर्वी दृढ़ निश्चयी और वफादार भी हैं और अब तक अपने आसपास होने वाले बदलाव से प्रभावित नहीं हुई, मेहनती रहीं हैं और हर परिस्थिति में अपना सर्वश्रेष्ठ देने से नहीं कतराई। असफलताओं से उर्वी बिलकुल भी प्रभावित नहीं लगीं और भावनाओं की मजबूती से इन्होने अपनी वापसी भी की हैं। रिश्तों के एक्सपॉयरी होने के बाद उनसे उपजी भावनाओं को बोतल में बद करने की हिमायती होने के कारणों में उर्वी कहतीं है बोतलों में बद नहीं करने से कभी भी जीवन में असामायिक विस्फोट हो सकता है और उसके उलट समय समय पर अपनी भावनाओं को व्यक्त करके निपटा भी जा सकता है। पूरी बातचीत के अर्थ में यह कारण समझ में भी आया कि अचानक आये परिवर्तन के बीच भी उर्वी कैसे स्थिर भी बनी रही और सभी परिस्थितियों में मेहनती होने का परचम भी लहराया है। उर्वी सौंदर्य की सराहना करती हैं और आराम तलबग़ारी इच्छाओं के साथ खुद बेहर कॉमन गर्ल के रूतबे को बनाए रखती है। अनेकों नाकामयाबियों और और मित्रता में विश्वासघातियों से का सामना करने के बावजूद उर्वी नित नए उत्साह नई सीख के साथ उबरी भी हैं। कथक नृत्य की शैली को अपने जीवन में संवारने के सवाली जवाब में उर्वी बताती हैं कि तीन या साढें तीन साल की उम्र से ही मुझे नृत्य में बढ़ाने का मेरी ममा का सपना था ममा के रूढ़िवादी परिवार के उस वक्त के दौर में ममा कुछ ऐसा नहीं कर पाई तो उनको यह लगता था कि ये बेटी है और मैं थिरकती भी थी थोड़ा जब गाना बजता था तो मेरे पैर ऐसे ऐसे हिलने लगते थे कुछ कुछ तो करती थी तो ममा को वो हरकतें देखकर उन्हे लगने लगा कि इसे कुछ तो चेनल देनी चाहिए तो एक बार कोशिश भी की गई। छोटे छोटे घुघरू बनवाए गए दस दस या पन्द्रह पन्द्रह के घुघरू या पांच उंगलियों का और पहली बार मेरे पैरों में वो घुघंरू डाला गया और एक दो बार में वहां पर कथक जैसा कुंछ करता हुआ देखकर ममा वहां से जाने को हुईं तो उनको जाते देखकर मुझे रोना आ गया और मैं रोने लगी। बचपन से लेकर 8–9वीं में पहंचने के सालों तक पूरे टाईम उन्हें ही देखकर मैं नृत्य करने की मेरी आदत बनी रही और ऐसे ही मैने स्टेज पर परफार्म भी किए। यहां भी एक मेडम हैं जो मुझे सीखा रहीं हैं पर मेरा ध्यान ममा पर होता था। पूरे टाईम ममा को देखकर ही नृत्य करने का जो सकून मिलता था ना वो आपको मैं शब्दों पर बयां नहीं कर सकती। ममा ने जब मुझे कथक में घर से भेजना शुरू किए तो जाने की बारी में मैं रोने लगती थी मैने हल्ला मचा देने था तो पापा ने ममा से कहा कि ये अभी सही उम्र में नहीं है इसे प्रेशर मत दो जब इसे अपने आप लगेगा धीरे से बडी होगी थोडी समझ वाली होगी तब हम इसे करवाएंगे। पापा को शुरूवात से ही मेरा रोना अच्छा नहीं लगता था यदि मैं खाना नहीं खा रही हूं और रो रही हूं तो जबरदस्ती मुझे खाना नहीं खिलाया जाता था जैसे आजकल की ममाएं अपने बच्चों को खाओ खाओ कहकर जबरन खिलाएं जाते हुए देखी जा सकती है पढ़ाई में मैं अच्छी थी घर पर सारे सब्जेक्ट मेरी मम्मी ही मुझे पढ़ाया करतीं थी। संस्कृत की पढ़ाई करने पर उनका बहोत ज्यादा जोर हुआ करता था और मेरे लिए संस्कृत पढ़ना इतना बोरिंग हुआ करता था ना कि मैं बता नहीं सकती। पूरा जवाब नहीं देने पर मम्मी की डॉट भी बहुत हुआ करती थी। बारहवीं तक मुझे समझ में यह नहीं आया था कि मम्मी संस्कृत की पढ़ाई पर इतना जोर क्यों देती रहीं है। कथक नृत्य में दाखिला होने के बाद कथक की पढ़ाई के दौरान मुझे समझ में आया कि मम्मा मेरी संस्कृत क्यूँ स्ट्रॉग करना चाहती थी। एक्चुअल में प्रासतन काल से ही कथक का पूरा बेस ही संस्कृत के श्लोकों और कथाओं पर ही बनाया गया है, जैसे– त्रयबकं यजामहे, विष्णु स्त्रोत, शिव स्त्रोत, आदि आदि। उर्वी बतातीं है कि कथक नृत्य की डिग्री पूरी करने के बाद उसने हैदराबाद, भोपाल, कटनी, बंगलोर सहित सिधी समाज के सभी स्टेज में उन्होने कथक परफॉर्म किया है। हालाँकि उर्वी से हुई सारी बातचीत को ज़िक्र करना यहाँ मुनासिब तो नहीं है पर आख़िर में नृत्य गुरूओं के द्वारा दी गई सीख ''जो करे रियाज़ वो करे राज'' का उल्लेख होना उर्वी के लिए अहम मायने रखता है। ग्राफिक्स : टोपेश चन्द्रा

––0––